क्रिस्मस २०१७ के पर्व के उपलक्ष्य में

संसार में आनन्दोल्लास है

स्वामी ईश्वरानन्द द्वारा एक वार्ता

२५ दिसम्बर, २०१७ को, क्रिस्मस के दिन श्री मुक्तानन्द आश्रम में एक सिद्धयोग सत्संग आयोजित हुआ। सत्संग के आरम्भ में प्रतिभागियों ने "Joy to the world," [जॉय टू द वर्ल्ड] यह क्रिस्मस का गीत [कॅरॉल] गाया जो बहुत सुन्दर और प्रफुल्लित करने वाला था। तत्पश्चात् सिद्धयोग ध्यान-शिक्षक, स्वामी ईश्वरानन्द ने यह वार्ता दी :

आप सभी को क्रिस्मस की शुभकामनाएँ!

आज मुझे आपसे बात करते हुए बहुत खुशी हो रही है; मैं जिस विषय पर बात करूँगा वह है, . . . भगवान।

श्रीगुरुमाई ने कहा है कि क्रिस्मस का दिन, भगवान का दिन है।

जैसे कि हमने अभी-अभी क्रिस्मस कॅरॉल सुना, "Joy to the world, the Lord has come." जिसका अर्थ है, "संसार में आनन्दोल्लास है, भगवान का आगमन हुआ है।"

निस्सन्देह, वह क्षण सबसे निराले ही आनन्द का होता है जब भगवान, ईश्वर आते हैं और आपके समक्ष अपनी प्रत्यक्ष उपस्थिति को प्रकट करते हैं।

सभी परम्पराओं के, सभी देशों और सभी धर्मों के लोगों में भगवान को यानी उस परम पुरुष व शक्ति को जानने की ललक होती है जिसने इस विविधतापूर्ण और सौन्दर्ययुक्त सृष्टि की रचना की है।

भगवान की उपस्थिति के प्रकट होने के साथ ही जिस आनन्द का उदय होता है, उसमें समस्त सांसारिक चिन्ताएँ दूर हो जाती हैं। आप जानते हैं कि भगवान आपके साथ हैं। और यदि भगवान आपके साथ हैं तब आप जानते हैं कि सब कुछ अच्छा ही होगा।

इसे मैं स्वयं अपने अनुभव से कह रहा हूँ। सालों पहले, जब मैं छोटा था, मुझमें भगवान को जानने की बड़ी उत्कट इच्छा थी। मैंने सुना था कि श्रीगुरु तुम्हें भगवान के दर्शन करा सकते हैं। इसलिए मैं श्रीगुरु से प्रार्थना करने लगा — हृदय की गहराई से प्रार्थना करने लगा। मैं 'हृदय की गहराई' इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मैं सचमुच ऐसा चाहता था, इस बारे में मुझमें शत प्रतिशत सच्चाई थी। मैंने श्रीगुरु से प्रार्थना की कि वे मुझे परम सत्य के दर्शन कराएँ, और श्रीगुरु ने मेरी प्रार्थना का उत्तर दिया भी।

एक महा-प्रकाश ऊपर से अवतरित हुआ, मेरे सिर के ऊपरी भाग से मेरे हृदय में प्रविष्ट हुआ। फिर यह प्रकाश एक अनन्त प्रकाश-स्तम्भ में परिवर्तित हुआ जिसका स्वरूप था, परम प्रेम। मैं जानता था कि यह प्रकाश-स्तम्भ भगवान ही हैं और यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की धुरी है, तथा यह कण-कण में विद्यमान है। इतने स्पष्ट व ठोस रूप में भगवान की उपस्थिति की अनुभूति कर, मुझे अतीव शान्ति की अनुभूति हुई।

मुझे याद है कि तब मैंने सोचा था कि यदि भगवान इस ब्रह्माण्ड के कण-कण में हैं तो मैं भगवान के संसार की सेवा करना चाहता हूँ।

श्रीगुरु की कृपा से जब हमें शक्तिपात प्राप्त होता है तब हम इस अनुभूति के प्रति जाग्रत होते हैं कि भगवान हमारी अपनी अन्तरतम आत्मा के रूप में हमारे अस्तित्व के केन्द्र में प्रत्यक्ष रूप में विद्यमान हैं। और हमें यह भी बोध हो जाता है कि भगवान का स्वरूप है, प्रकाश व प्रेम।

जब भी आप अपने हृदय में शुद्ध प्रेम उमड़ता हुआ महसूस करें तो जान लें कि आप भगवान की अनुभूति कर रहे हैं। प्रेम भगवान का स्वरूप है और जब हम इस प्रेम के साथ जुड़े रहकर कार्य करते हैं तो हम भगवान की उपस्थिति के अपने बोध को और भी गहरा बना देते हैं। अपने दिनों व रातों को भगवान के प्रेम से भर जाने दें।

इतने वर्षों में अनेक सिद्धयोगियों से उनके प्रसंगों को सुनकर मैं हमेशा ही विस्मित हुआ हूँ कि कैसे भगवान हृदय की प्रार्थनाओं के उत्तर देते हैं। इनमें से हर एक प्रसंग इस बात की पुष्टि करता है कि भगवान हर एक हृदय में वास करते हैं और हमारी प्रार्थनाओं को सुनते हैं।

कभी-कभी भगवान उस ललक के रूप में प्रकट होते हैं जो हमारे हृदय में जगती है और हमें उनकी ओर ले जाती है।

कई वर्षों पहले की बात है। लगभग बीस वर्षीय एक युवती थी जो लॉस् एन्जलॅस् में रहती थी और वहीं काम करती थी। सब कुछ बड़ा अच्छा चल रहा था, फिर भी अन्दर गहराई में उसे लगता था कि

कहीं कुछ तो कमी है, और उसे लगता था कि इस 'कुछ' के न होने के कारण उसका जीवन अधूरा है। इसलिए वह बड़ी तीव्रता से भगवान से प्रार्थना करने लगी कि वे उसे मार्ग दिखाएँ। वह गुप्त रूप से, अकेले में और बड़ी लगन से मन ही मन यह प्रार्थना करने लगी।

उसकी प्रार्थनाएँ सुनी गईं और बड़े ही रहस्यमय तरीक़े से उसे अपनी प्रार्थनाओं का उत्तर मिला। एक बार क्रिस्मस के अवसर पर वह एक बड़ी-सी पार्टी में गई थी, जहाँ बहुत-से लोग थे। वहाँ की बत्तियाँ धीमी थीं और ऊँची आवाज़ में संगीत चल रहा था। फिर भी, उसका ध्यान कमरे के उस पार गया जहाँ उसने देखा कि एक व्यक्ति जोशपूर्ण हावभाव के साथ एक महिला से बात कर रहा है। बिना यह जाने कि क्यों, वह युवती सीधे उनके पास गई और अपना परिचय दिए बिना उसने पूछा, "आप किस बारे में बातें कर रहे हैं?"

वह व्यक्ति मुस्कराया और बताने लगा कि वह अपनी दोस्त को बता रहा है कि उस दिन वह ध्यान के एक कार्यक्रम में गया था जो गुरुमाई चिद्विलासानन्द नाम की एक सिद्धगुरु के साथ था और वह कार्यक्रम अत्यन्त शक्तिपूरित था।

उस युवती ने उससे पूछा कि कार्यक्रम में उसने क्या सीखा। उस व्यक्ति ने बताया कि गुरुमाई जी ने सिखाया कि भगवान सभी के हृदय में निवास करते हैं और अन्तर में मुड़कर भगवान को जाना जा सकता है।

इस पर युवती ने पूछा, "अन्तर में कैसे मुड़ते हैं?" उस व्यक्ति ने जवाब दिया कि गुरुमाई जी लोगों को एक मन्त्र देती हैं, 'ॐ नमः शिवाय', जिसे उन्हें दोहराना होता है; इस मन्त्र का अर्थ है, "मैं भगवान को नमन करता हूँ जो मेरे हृदय में निवास करते हैं।"

यह सुनकर उस युवती को अन्तर में ऐसी प्रेरणा हुई कि वह सीधे अपने घर जाए। घर पहुँचकर वह अपनी सबसे आरामदायक कुर्सी पर बैठी और उसने गुरुमाई जी से प्रार्थना की कि वे भगवान को जानने में उसकी सहायता करें। वह मन्त्र दोहराने लगी और जल्द ही तनावमुक्त महसूस करने लगी। जैसा कि वह बताती है कि एक बिन्दु पर आकर उसे ऐसा लगा मानो वह शक्ति की मन्द-मन्द बयार से घिरी हुई है जो उसे अन्तर की ओर खींच रही है। उसने पाया कि एक अत्यन्त अलौकिक माधुर्य उसके अन्तर में उमड़ रहा है — उसके अपने ही अन्तर में भगवान का माधुर्य। एक ऐसा माधुर्य जो उसे कभी छोड़कर गया ही नहीं है।

वह हृदय के इस पथ का, सिद्धयोग पथ का अनुसरण करती रही है और अब वह अपने बच्चों को सिखाती है कि भगवान ने स्वयं अपने प्रेम में से इस संसार की रचना की और वे स्वयं इसमें वास करते हैं, वे हर प्राणी में वास करते हैं। वह अपने बच्चों को सबके प्रति सम्मान का भाव रखते हुए जीवन जीना सिखाती है। यह श्रीगुरुमाई की सिखावनी है जिसका पालन वह कर रही है, और यही सिद्धयोग पथ का लक्ष्य है — हमारे अन्दर व समस्त सृष्टि में निहित दिव्यता का बोध बनाए रखते हुए जीना। हम कितने भाग्यशाली हैं कि हमें इसका प्रत्यक्ष ज्ञान व अनुभव सुलभ है।

भगवान हमारे अन्दर प्रत्यक्ष रूप में विद्यमान हैं और वे हमारे हृदय की प्रार्थनाओं व ललक का उत्तर देते हैं। इसलिए, भगवान की ओर मुड़ें, भगवान से बातें करें, भगवान का ध्यान करें, और उनका नाम गाएँ।

आज, क्रिस्मस का दिन, भगवान का दिन है। हम यह याद रखें कि जब हम उन्हें अपने हृदय में प्रकट होने के लिए आमन्त्रित करते हैं तो वे दर्शन देते हैं। आप भगवान के प्रकाश के, भगवान के प्रेम के वाहक हैं।

संसार पर इस प्रकाश की वर्षा करें! संसार पर इस प्रेम की वर्षा करें!

संसार में आनन्दोल्लास है!

संसार में आनन्दोल्लास है! भगवान का आगमन हुआ है!

आप सभी को क्रिस्मस की शुभकामनाएँ!

© २०१७ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।